STD. VIII HINDI LIT. (कौरव नगरी भाग --3) प्रश्न उत्तर :-

प्रश्न 1.प्रहरी स्वयं को थका हुआ क्यों कहते हैं?

उत्तर :--- प्रहरी महल में पहरा देने का काम करते हैं पर वे पहरा देकर नहीं थके हुए हैं बल्कि महलों में हो रही अनीति, षड्यंत्र, व कुचक्र को देख-देखकर उनके मन आहत हो चुके हैं, जिससे वे मानसिक रूप से थके हुए ,हारे हुए महसूस कर रहे हैं।

प्रश्न 2." रक्षक थे हम केवल लेकिन रक्षणीय कुछ भी नहीं था-"- आशय स्पष्ट करें।

उत्तर:-- प्रहरी कहते हैं कि वे रक्षा करने वाले अवश्य थे पर हस्तिनापुर में तो रक्षा करने योग्य कुछ भी नहीं बचा था। एक नेत्रहीन व पुत्र मोह में अंधा राजा सिंहासन पर सुशोभित था, न वह रक्षा करने योग्य था और न ही उसकी नीतियाँ रक्षणीय ।

ऐसा राज्य जहाँ एक भाई अपने ही मृत भाई के पुत्रों को उनके अधिकारों से वंचित कर, गलत ध्येय की ओर बढ़ रहा हो,जहाँ कुलवधूका सभागार में चीरहरण करने की चेष्टा हो,वहाँ भला क्या रक्षा करने योग्य होगा!

अतः प्रहरी कहते हैं वहाँ रक्षणीय कुछ भी नहीं था ।

प्रश्न 3. "जिसके अंधेपन में मर्यादा प्रजा जनों को भी रोगी बनाती फिर" ,ऐसा क्यों कहा गया है ?

उत्तर :-धृतराष्ट्र तो जन्मांध थे ही पर पुत्र के मोह में अपनी सोच व विचार से भी अंधे हो चुके थे। फलतः सारी मर्यादाओं टूट चुकी थीं ।वे सत्य देख कर भी नहीं देख पा रहे थे ।सही- ग़लत का फ़र्क करना भूल चुके थे और कहा गया है जैसा राजा वैसी ही प्रजा। अतः प्रजा भी कुटिल व स्वार्थी होती जा रही थी। यहसचमुच अंधा युग था।

प्रश्न 4.कर्मचारी स्वयं को अस्तित्व विहीन क्यों कहते हैं ?

उत्तर :---प्रहरी इस बात को अच्छी तरह समझ चुके थे कि राजा अपनी ज़िद व अहंकार को पूरा करने के लिए ग़लत ध्येय की ओर बढ़ रहे थे।इस वजह से हस्तिनापुर के प्रति उनकी आस्था ,उनका विश्वास डगमगाने लगा था और उन्हें अपना अस्तित्व ,अपना वजूद ही झूठा ,अर्थहीन व मूल्यहीन लगने लगा था।

वो सबकुछ जानते बूझते हुए भी ग़लत का साथ देने पर मजबूर थे।